Paper B.A. III History

उत्तरी भारत की नवपाषाण संस्कृति -

Neolithic Culture of North India

भारत के उत्तरी क्षेत्र की नवपाषाण संस्कृति के प्रमाण जम्मू कश्मीर प्रदेश की झेलम घाटी से उपलब्ध होते हैं। इनमें तीन पुरास्थल मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं। बुर्जहोम, मार्तंड एवं गुफ्फकराल। डेटेरा एवं पैटरसन के नेतृत्व में सर्वेक्षण द्वारा झेलम नदी के किनारे श्रीनगर से 6 मील दूर बुर्जहोम नामक स्थान की खोज हुई। यहाँ पर उस समय एक परीक्षात्मक उत्खनन हुआ। 1950 से 1964 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इस क्षेत्र से टी० एन० खजांची के निर्देशन में विधिवत उत्खनन कार्य करवाया। इन स्थलों पर उत्खनन के परिणाम स्वरूप निम्न तीन सांस्कृतिक स्तर प्रकाश में आए हैं -

(i) नवपाषाण काल (ii) वृहत्पाषाण काल (iii) ऐतिहासिक काल

(i) नवपाषाण काल :- यहाँ पर गड्ढे खोदकर निवास करने के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। ये गड्ढे गोल एवं अण्डाकार हैं जिसका व्यास 80 से 30 सें० मी० ऊपर एवं 1.50 मी० से 3.80 मी० नीचे की ओर प्राप्त होते हैं। सबसे बड़े गड्ढे का निवास का व्यास 2.74 मी० तथा नीचे की ओर धरातल पर 4.57 मी० है। इन गड्ढों के चारों ओर स्तम्भगर्त के अवशेष उपलब्ध होते हैं। साथ ही इन पर छत होने की संभावना भी प्रकट होती है एवं निकट ही चूल्हों के भी अवशेष उपलब्ध हुए हैं। गड्ढों के अंदर की धरातल को मिट्टी द्वारा भली-भाँति लीप कर तैयार किया गया है। इतना ही नहीं इनमें नीचे उतरने के लिए मिट्टी को काटकर सीढ़ियाँ भी बनायी गयी थी।

इस काल में किसी भी प्रकार के मृद्भाण्डों के टुकड़े प्राप्त नहीं होते, इसलिए इस काल को "मृद्भाण्ड रहित नवपाषाण काल" के नाम से जाना जाता है। यहाँ उपलब्ध पाषाण उपकरण मुख्यतया ट्रैप या पत्थर पर निर्मित हैं। उपकरणों में मुख्यतः वेधक गदाशीर्ष (Ring-stone) पाषाण वलय, कुल्हाड़ियाँ सिल-लोढ़ा उपलब्ध होते हैं। इस क्षेत्र से हिरणों के पैरों, हड्डियों एवं सींगों से निर्मित उपकरण भी प्रकाश में आते हैं। जिनमें वेधक, खुरपी, सुईयाँ, स्क्रेपर आदि उल्लेखनीय हैं। हिरण के अतिरिक्त भेड़-बकरी की हड्डियों के उपकरण भी प्राप्त होते हैं

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त उपकरणों के साथ ही हड्डी और सेलखड़ी से निर्मित मनके भी विशेष उल्लेखनीय हैं।

गुफकराल से अनाज के प्रमाण अवशेष भी प्राप्त हुए हैं जिनमें गेहूँ, मसूर, और जौ मुख्य हैं। ये जंगली हैं तथा उपजाये जाते थे इस बारे में जानकारी सीमित है।

दूसरे काल में यहाँ की नवपाषाण कालीन संस्कृति के भवनों में बदलाव प्रदर्शित होता है। जो कि गुफकराल एवं बुर्जहोम दोनों ही स्थलों पर देखा जाता है। अब निवास गड्ढों के रूप में न होकर ऊपरी तरह पर प्रारम्भ हो गया साथ ही हस्तनिर्मित मृद्भाण्डों का प्रचलन भी प्रारम्भ हो जाता है।

भवनों को आयताकार रूप में पहले से विशाल एवं कच्ची मिट्टी से बनाया जाने लगा। मकान की सतह अर्थात् फर्श को लीपा जाता था। बाद में दीवारों द्वारा कमरों के रूप में विभक्त किया गया। साथ ही यहाँ चबूतरे युक्त घर मिले हैं। इस प्रकार के उदाहरण बुर्जहोम में दिखाई देते हैं।

इस काल में भारी उपकरणों की संख्या नगण्य है किन्तु लघु पाषाण उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं जिनमें स्क्रैपर (14), द्वि छिद्रयुक्त हेरो हेड (2) गोले (Sling Ball) 2, सिल लोढ़े एवं तकुए। तकुए मृण निर्मित भी प्राप्त होते हैं।

इस उपकाल में मृद्भाण्डों के प्रचलन में विविधता देखने को मिलती है। इनमें हस्त एवं चाक निर्मित पात्र परम्परायें भी परिलक्षित होती हैं। हस्त निर्मित पात्रों में धूसर, घर्षित धूसर, फीके (लाल) रंग एवं चटक काले पात्रों की परम्परा है। इनमें कटोरे, सकरे मुख के घड़े, उथली (कम गहरी) थालियाँ एवं लोटे मुख्य हैं। इनके पेंदे में चटाई, रस्सी, एवं सरकंडों की छापयुक्त डिजाइन है। इनपर तिर्यक रेखाओं द्वारा अलंकरण प्राप्त होता है।

पूर्वकाल की भाँति इस उपकाल में भी जौ, गेहूँ, मटर, मसूर, आदि के उदाहरण प्राप्त होते हैं। हारवेस्टर की खेती विशेष रुझान इंगित करती है। पशुपालन में विशिष्ट परिवर्तन परिलक्षित होता किन्तु पशुपालन में बहुतायत देखने को मिलती है। पशुओं के शिकार धीरे-धीरे कम होते जाते हैं। भेड़-बकरियों की प्राप्ति

आखेट के बाल-बाल कुत्ता, खरगोश, मछली, चूहे आदि की भी अस्थियाँ प्राप्त होती हैं जिससे छोटे एवं बड़े पशुओं के आहार में उपयोग पर प्रकाश पड़ता है।

उपर्युक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त इस काल में आभूषणों के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं जिनमें मिट्टी की चूड़ियाँ, हड्डी एवं प्रस्तर मनके उल्लेखनीय हैं।

तिथि निर्धारण :→ बुर्जहोम एवं गुफकराल से अनेक रेडियो कार्बन तिथियाँ प्राप्त हुई हैं जिनके आधार पर इस संस्कृति का प्रारम्भ 2375 ई०पू० से अन्त 1700 ई०पू० तक निरंतर रूप में माना गया है। गुफकराल की तिथियाँ दूसरे एवं तीसरे उपकाल की हैं। इन तिथियों के आधार पर द्वितीय उपकाल का प्रारम्भ 2000 ई०पू० माना ~~जाता~~ जाता है। विद्वानों ने 800 वर्ष पहले माना है। अतः इस संस्कृति का प्रारम्भ 2500 ई०पू० में हुआ एवं निर्बाध रूप से यह संस्कृति 1500 ई०पू० तक चलती रही।

विन्ध्य क्षेत्र :→

उत्तरी-विन्ध्य क्षेत्र मुख्यतया गंगा के मैदानी भाग एवं मध्य भारत के पर्वतीय क्षेत्रों के बीच मुख्य रूप में बाँदा, मिर्जापुर आदि क्षेत्रों में समय-समय पर नव पाषाण कालीन उपकरण प्रकाश में आते रहे किन्तु कालान्तर में किए गए सर्वेक्षणों के फलस्वरूप अन्य महत्वपूर्ण पुरास्थल प्रकाश में आए तथा ये ~~स्थल~~ अतिरिक्त क्षेत्रों से प्राप्त होने लगे थे जिनमें उत्तर ~~प्रदेश~~ प्रदेश का इलाहाबाद जिला एवं मध्यप्रदेश का सीधी जिला है। इलाहाबाद के दक्षिणी क्षेत्र मेजा तहसील में कोलडिहवा, पंचोह, एवं ~~महगड़ा~~ महगड़ा, इन्दारी, बेलाघाटी एवं कुनझुन तथा लहरिया, सौनघाटी के पुरास्थल अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनमें से कोलडिहवा, पंचोह इत्यादि स्थलों का उत्खनन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्वाधान में किया जा चुका है जिसके परिणाम स्वरूप महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्रकाश में आई।

बेलन नदी के किनारे इलाहाबाद शहर से 80 K.M. दक्षिण पूर्व की ओर कोलडिहवा एवं महगड़ा स्थित हैं। कोलडिहवा बेलन ~~नदी~~ नदी के बाँये किनारे पर है। एवं पंचोह इन स्थलों से 2.50 कि०मी० दूर अथवा बेलन की सहायक नदी के किनारे पर है ~~एवं पंचोह~~

Scanned with CamScanner

~~इन स्थानों से प्राप्त~~ कोलडिहवा पर 1969-70 से 1974-75 तक उत्खनन कार्य चलता रहा। यहाँ का सांस्कृतिक जमाव 1.90 मी० है एवं यहाँ से तीन अलग-अलग संस्कृतियों के अवशेष प्रकाश में आते हैं। 1. नवपाषाण युग 2. ताम्राश्म युग (3) लौहयुग।

निवास स्थल :→ कोलडिहवा एवं महगढ़ा से इस काल के निवास के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। जन-सामान्य अण्डाकार या गोलाकार झोपड़ियों में निवास करते थे जो कि लकड़ी एवं बल्लियों द्वारा निर्मित होती थी। इन घरों को घास-फूस से छाया जाता था। संभवतः सरकण्डों के ऊपर मिट्टी लेप के पश्चात इनकी दीवारें बनायी जाती थी। जैसा कि जली मिट्टी पर सरकण्डों की छाप युक्त अवशेष उत्खनन से प्राप्त होते हैं।

उपकरण :— इस क्षेत्र से प्राप्त उपकरणों में सबसे अधिक संख्या ग्राउण्ड एक्सेस की है जिनकी औसत लम्बाई 53 मि०मी०, चौड़ाई 44.5 मि०मी० एवं मोटाई 19 मि०मी० है। इनके अतिरिक्त सिल-लोढ़े पाषाण गोले एवं छिद्रित पत्थर हैं पाषाण उपकरणों में चर्ट, चाल्सीडोनी, कार्नेलियन, अगेट के लघु पाषाण उपकरण जिनमें ब्लेड मुख्य हैं प्राप्त हुए हैं।

मृद्भाण्ड :— विन्ध्य क्षेत्र के पात्रों में मुख्यतया तीन प्रकार के पात्र उपलब्ध होते हैं डोरी छाप मृद्भाण्ड, चमकदार मृद्भाण्ड एवं खुरदुरे मृद्भाण्ड। इन पात्रों को धान के छिलके मिलाकर निर्मित किया जाता था। डोरी छाप युक्त मृद्भाण्डों पर लाल रंग पर डोरी की छाप का ~~अलंकरण~~ अलंकरण मिलता है। ये मोटे पात्र छिछले गहरे एवं टोंटीयुक्त कटोरे एवं घड़ों के रूप में प्राप्त होते हैं। चमकीले पात्र लाल एवं काले हैं। ये अन्दर एवं बाहर रंगकर चमकाये गये हैं। इन पात्रों में तश्तरियों कटोरे एवं घड़े आदि हैं। इनपर चित्र उत्कीर्णित हैं।

पशुपालन :→ इन पुरास्थलों से पालतू एवं जंगली दोनों प्रकार के जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त होती हैं। महगढ़ा से एक पशु निवास क्षेत्र की प्राप्ति विशेष उल्लेखनीय है। कई विभिन्न जानवरों के पैरों के निशान एवं चारों ओर स्तम्भगर्त। इस स्थल की लम्बाई 12.5 एवं चौड़ाई 7.5 मीटर है। इसे बल्लियों या बाँस द्वारा घेरा गया था। इनमें तीन दरवाजे भी थे- एक पूर्व में एवं दो दक्षिण दिशा में। पालतू पशुओं में भेड़-बकरियों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। जंगली जानवरों में सुअर, हिरण मुख्य हैं इनके अतिरिक्त चिड़ियों, कछुए एवं मछलियों की हड्डियों की प्राप्ति से पशुपालन के साथ-साथ जंगली जानवरों के शिकार-का

Scanned with CamScanner